मंझन

मंझन हिंदी के एक प्रसिद्ध सूफी कवि थे । इनके जीवन के संबंध में बहुत ही कम जानकारी प्राप्त है । अभी तक इनकी एकमात्र रचना 'मधुमालती' का ही पता चला है । यह कहना कठिन है कि इनकी और कोई अन्य रचना है या नहीं । 'मधुमालती' में मंझन ने अपने संबंध में थोड़ा बहुत संकेत किया है । 'मधुमालती' की रचना सन् 1545 में हुई । इससे इतना अनुमान लगाया जा सकता है कि ईस्वी सन् की सोलहवीं शताब्दी के मध्य में वे वर्तमान थे । मंझन के काल आदि को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद रहा है । उनके धर्म, उनके निवास स्थान आदि के संबंध में नाना प्रकार के मत उपस्थित किए गए हैं ।

उनके निवास स्थान के संबंध में दो प्रकार के मत प्रकट किए गए हैं । मधुमालती की एक पंक्ति "गढ़ अनूप' बस नग्र चर्नाढ़ी, कलयुग भो लंका जो गाढ़ी" के आधार पर मंझन के निवास स्थान का अनुमान लगाया गया है । परशुराम चतुर्वेदी ने अनुमान किया है कि अनूपगढ़ मंझन का निवास स्थान रहा होगा या "ढ़ी" से अंत होने वाला नगर । किन्तु डॉ० शिवगोपाल मिश्र इससे सहमत नहीं हैं । उनके अनुसार चर्नाढ़ी मधुमालती काव्य के नायक मनोहर के पिता सूरजभान की राजधानी थी । अन्य साक्ष्यों के आधार पर चतुर्वेदी जी का ही मत सही जान पड़ता है ।

ऐसा प्रतीत होता है जैसे मंझन अपना निवास स्थान छोड़ दूसरी जगह रहने लगे थे । मधुमालती में अपने संबंध में कहा है – "तब हम भो दोसर बासा, जबरे पितै छोड़ा कविलासा" । मंझन ने अपने गुरु का नाम शेख महम्मद या गोस महम्मद बतलाया है लेकिन इससे अधिक अपने गुरु के संबंध में कुछ नहीं कहा है । और न ही अपनी गुरु परंपरा का ही जिक्र किया है । वैसे अपने गुरु के संबंध में उन्होंने इतना अवश्य कहा है कि वे सिद्ध पुरुष थे तथा उन्हीं की कृपा से उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रवृत्त हुए ।

मंझन सूफी कवि थे । अतएव उन्होंने सूफियों की प्रेमपद्धति को ही अपनाया है । सूफियों का विश्वास है कि प्रेम के द्वारा ही परमात्मा को पाया जा सकता है । प्रस्तुत दोनों कड़बक (कड़बक एक छंद है जो दोहा और चौपाई से मिलकर बनता है ।) प्रेम के महत्त्व को ही उद्घाटित करते हैं । कवि के अनुसार प्रेम रूपी ज्योति से ही यह संसार प्रकाशमान है ।

(1)

पेम अमोलिक नग सयंसारा । जेहि जिअं पेम सा धनि औतारा ।
पेम लागि संसार उपावा । पेम गहा बिधिं परगट आवा ।
पेम जोति सम सिरिट अंजोरा । दोसर न पाव पेम कर जोरा ।
बिरुला कोइ जाके सिर भागू । सो पावै यह पेम सोहागू ।
सबद ऊँच चारिहुं जुग बाजा । पेम पंथ सिर देइ सो राजा ।

पेम हाट चहुं दिसि है पसरी गै बनिजौ जे लोइ ।
लाहा औ फल गाहक जनि डहकावै कोइ ।।

(2)

अमर न होत कोइ जग हारै । मरि जो मरै तेहि मींचु न मारै ।
पेम के आगि सही जेइं आंचा । सो जग जनमि काल सेउं बांचा ।
पेम सरनि जेइं आपु उबारा । सो न मरै काहू कर मारा ।
एक बार जौ मरि जीउ पावै । काल बहुरि तेहि नियर न आवै ।
मिरितु क फल अब्रित होइ गया । निहचैं अंमर ताहि कै कया ।

जौ जिउ जानहि काल भौ पेम सरन करि नेम ।
फीरै दुहुं जग काल भौ सरन काल जग पेम ।।

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि ने प्रेम को संसार में अँगूठी के नगीने के समान अमूल्य माना है । इस पंक्ति को ध्यान में रखते हुए कवि के अनुसार प्रेम के स्वरूप का वर्णन करें ।
2. कवि ने सच्चे प्रेम की क्या कसौटी बताई है ?
3. 'पेम गहा बिधि परगट आवा' से कवि ने मनुष्य की किस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है ?
4. आज मनुष्य ईश्वर को इधर-उधर खोजता फिरता है लेकिन कवि मंझन का मानना है कि जिस मनुष्य ने भी प्रेम को गहराई से जान लिया स्वयं ईश्वर वहाँ प्रकट हो जाते हैं । यह भाव किन पंक्तियों से व्यंजित होता है ?
5. कवि की मान्यता है कि प्रेम के पथ पर जिसने भी अपना सिर दे दिया वह राजा हो गया । यहाँ 'सिर देना' का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।
6. प्रेम से व्यक्ति के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? पठित पदों के आधार पर उत्तर दीजिए ।
7. सप्रसंग व्याख्या करें -

   "पेम हाट चहुं दिसि है पसरीगै बनिजौ जे लोइ ।
   लाहा औ फल गाहक जनि डहकावै कोइ ॥

8. भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें -

   (क) एक बार जौ मरि जीउ पावै । काल बहुरि तेहि नियर न आवै ।
   (ख) भिरितु क फल अँब्रित होइ गया । निहचै अंमर ताहि कै कया ।

9. प्रेम में सर्वस्व समर्पण से व्यक्ति के निजी जीवन में आत्मिक सुंदरता आ जाती है, वह परिपक्वता कवि के विचारों में किस प्रकार आती है ? स्पष्ट करें ।
10. प्रेम की शरण में जाने पर जीव की क्या स्थिति होती है ?

कविता के आस-पास

1. कवि ने प्रेम के आदर्श स्वरूप की चर्चा की है । अन्य कवियों के इस तरह के कुछ पद संकलित कीजिए ।
2. क्या आज व्यक्ति प्रेम के इस आदर्श स्वरूप को स्वीकार कर रहा है ? समाज में आज प्रेम का कौन-सा स्वरूप मौजूद है ? अपने विचार व्यक्त करें ।
3. मंझन की पंक्तियों को यथासंभव कंठस्थ कर कक्षा में सुनाएँ ।
4. मंझन के समकालीन अन्य कवियों से संबंधित जानकारी शिक्षक की सहायता से एकत्र करें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें –

   संसार, सिर, हाट, पंथ, प्रेम

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –

ऊँच, अमृत, प्रगट, प्रेम, सिर

3. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखें –

सबद, मिरितु, पेम, सिस्टि, दोसर, गाहक, अंब्रित

शब्द निधि

पेम	:	प्रेम	पंथ	:	रास्ता
अमौलिक	:	अमूल्य	पसरीगै	:	फैल गया
नग	:	बेशकीमती रत्न	बनिजै	:	वणिज, व्यापारी
जेहि	:	जिसको	लाहा	:	प्राप्त करना
जिअं	:	आत्मा, हृदय	डहकावै	:	भ्रमित करना
धनि	:	धन्य	तेहि	:	उसको
औतारा	:	अवतरण होना	मींचु	:	मृत्यु
उपावा	:	प्रकट होना	आंचा	:	आँच, ताप
जोति	:	ज्योति	बांचा	:	बाँटना
सिस्टि	:	सृष्टि	सरनि	:	सीढ़ी, सोपान
अंजोरा	:	प्रकाश	आपु	:	स्वयं
दोसर	:	दूसरा, अन्य	बहुरि	:	पुनः
पाव	:	पाना	नियर	:	नजदीक
जोरा	:	जोड़ा	निहचैं	:	निश्चय
विरला	:	विरल	नेम	:	नियम, व्रत
सोहागू	:	सौभाग्य	फीरै	:	घूमना-फिरना, चलना
सबद	:	शब्द	दुहुं	:	दोनों
चारिहु	:	चारों युग	भौ (भव)	:	संसार